Hindustan- New Delhi- 05-04-2011

खर्च पर काबू करने में दिल्ली वाले सबसे तेज

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली

लगातार बढ़ते पेट्रोल के दामों ने दिल्ली के मध्यम आय वाले लोगों का तेल निकाल दिया है। पिछले एक साल में बढ़ती महंगाई, ब्याज दरों और ईंधन की कीमतों के कारण सबसे अधिक दिल्ली वालों ने बाहर खाना, खरीदारी, मनोरंजन और छुट्टियों आदि पर पैसा खर्च करना कम कर दिया है। वहीं 65 फीसदी भारतीय लोगों ने मनोरंजन, शॉपिंग और होटलिंग के खर्चों में भारी कटौती कर दी है।

एसोचैम द्वारा 'मध्यम वर्ग पर महंगाई का प्रभाव' नाम से किए गए सर्वे में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, अहमदाबाद, हैदराबाद, पुणे, चंडीगढ़ को शामिल किया गया। इसमें हर शहर से 500 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में यह बात सामने आई कि जब महंगाई की दर 7 फीसदी थी लोग हर महीने मनोरंजन, होटल में खाने-पीने और खरीदारी में 4000 से 6000 रुपये खर्च करते थे। जो पिछले एक साल में घटकर 2500 रुपये रह गया है।

कम नहीं हुई गालों की 'लाली'

सर्वे में कुछ चौकाने वाले आंकडे भी सामने आए हैं। इसमें से एक यह है कि महंगाई बढ़ने के बावजूद महिलाओं ने अपने सौंदर्य पर खर्च करना कम नहीं किया है। अब भी महिलाएं हर महीने औसतन 300 से 1200 रुपये तक सौंदर्य सामग्री पर खर्च करती हैं। साथ ही पुरुषों ने भी शराब, सिगरेट, गुटखा-पान आदि पर 400 से 1000 रुपये महीना खर्च करना जारी रखा है।

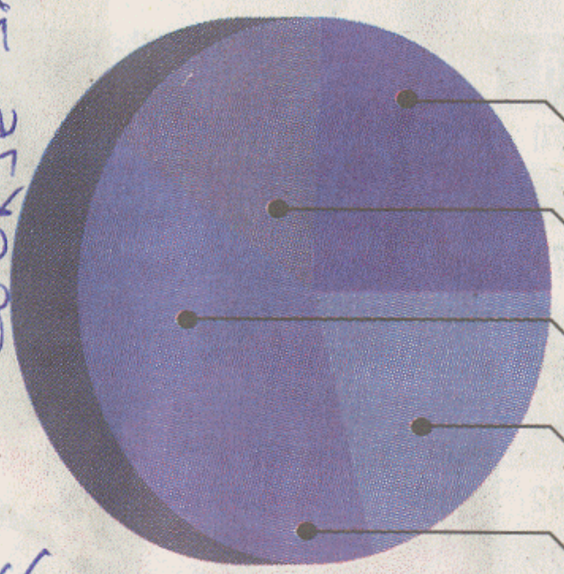

- होटलों में खाना कम 65 फीसदी
- वाहन खरीद में कटौती 42 फीसदी
- नहीं जाते घूमने 54 फीसदी
- घरेलू सामान कम 49 फीसदी
- कपड़े खरीदना कम 55 फीसदी

फीस ने तोड़ी कमर

जहां एक तरफ महंगाई के आंकड़ों ने आम जनता का तेल निकाल दिया है वहीं दूसरी ओर स्कूल की फीस ने अभिभावकों की कमर तोड़ दी है। एसोचैम द्वारा पहले जारी किए गए आंकड़ों के हिसाब से प्री-स्कूल के बच्चों के लिए स्कूल फीस 2005 से 2010 के बीच 120 गुना बढ़ गई। इसके साथ प्री-स्कूल में दाखिले के दौरान दी जाने वाली सिक्योरिटी मनी में 150 फीसदी का इजाफा हुआ है। सर्वे के अनुसार भारत का शिक्षा कारोबार हालिया 4000 करोड़ से बढ़कर 2013 में 8000 करोड़ हो जाएगा।

नहीं उठा पा रहे बोझ

हाल ही में एसोचैम द्वारा किए गए एक सर्वे में यह आंकड़ा सामने कि भारतीय अभिभावक बड़े बच्चों की फीस का खर्च उठाने में असमर्थ होने लगे हैं। सर्वे के आंकड़े के अनुसार हाई स्कूल की पढ़ाई तक अभिभावक बच्चे की पढ़ाई पर 18 से 20 लाख खर्च कर चुका होता है। इसके अनुसार बच्चों की पढ़ाई पर होने वाला खर्च 2005 से अब तक 170 फीसदी बढ़ चुका है। फीस, ट्रांसपोर्ट, किताबों, स्टेशनरी, कपड़ों आदि का खर्च इतना बढ़ चुका है कि औसतन एक बच्चे पर 94,000 रुपये का खर्च आ रहा है।

सालाना खर्च

शर्ट\ट्राउजर\स्कर्ट	3000
जूते	3500
बैग\बोतल	1800
खेल सामग्री	3500
कॉपी-किताब	4500
स्कूल ट्रिप	3800
ट्रांसपोर्ट+कोचिंग	36000
बिल्डिंग फंड	25000

(आंकड़े रुपये में)